IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारत की इंडो–पैसिफिक रणनीति और क्वाड की भूमिका: शक्ति संतुलन और क्षेत्रीय सहयोग का विश्लेषण

वजीता

शोधार्थी, राजनीतिक विज्ञान एवं लोक प्रशासन विभाग,

बाबा मस्तानाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर रोहतक।

सारांश

इंडो–पैसिफिक क्षेत्र आज वैश्विक राजनीति, सुरक्षा और व्यापार के लिहाज़ से अत्यंत महत्वपूर्ण भू–राजनीतिक क्षेत्र बन गया है। यह क्षेत्र हिंद महासागर से लेकर प्रशांत महासागर तक फैला हुआ है, जिसमें एशिया, अफ्रीका और ओशिनिया के कई प्रमुख देश शामिल हैं। विश्व के एक बड़े भाग का समुद्री व्यापार इसी क्षेत्र से होकर गुजरता है, साथ ही ऊर्जा आपूर्ति, समुद्री संसाधनों और रणनीतिक जलमार्गों की उपस्थिति इस क्षेत्र को और भी महत्वपूर्ण बनाती है। दक्षिण चीन सागर, मलक्का जलडमः मध्य और अंडमान सागर जैसे संवेदनशील क्षेत्र वैश्विक शक्ति संघर्ष का केंद्र बन चुके हैं, जिससे इस क्षेत्र का सामरिक महत्व और भी बढ़ गया है। भारत की भौगोलिक स्थिति इस क्षेत्र में उसे एक विशेष सामरिक लाभ प्रदान करती है। भारत हिंद महासागर के केंद्र में स्थित है और इसकी लंबी समुद्री सीमा इसे एक समुद्री शक्ति के रूप में स्थापित करती है। अंडमान और निकोबार द्वीप समूह की उपस्थिति के कारण भारत मलक्का जलडमरूमध्य जैसे रणनीतिक जलमार्गों पर नजर रखने की क्षमता रखता है। इसके अलावा, भारत की पूर्वी और दक्षिण–पूर्वी एशियाई देशों से भौगोलिक निकटता उसे क्षेत्रीय सहयोग के एक मजबूत स्तंभ के रूप में उभरने का अवसर देती है। हाल के वर्षों में भारत ने "एक्ट ईस्ट पॉलिसी" और "SAGAR" (Security and Growth for All in the Region) जैसी पहलें शुरू कर अपनी समुद्री रणनीति को स्पष्ट किया है। इस शोध का मुख्य उद्देश्य भारत की इंडो–पैसिफिक नीति और क्वाड में उसकी भूमिका का विश्लेषण करना है। शोध यह जानने का प्रयास करेगा कि भारत किस प्रकार इस क्षेत्र में शक्ति संतुलन बनाए रखने के लिए रणनीतिक साझेदारियों का निर्माण कर रहा है और किस हद तक यह नीतियाँ क्षेत्रीय स्थिरता तथा सहयोग को बढ़ावा दे रही हैं। साथ ही यह भी महत्वपूर्ण है कि भारत की ये नीतियाँ वैश्विक शक्तियों, विशेषकर अमेरिका और चीन के बीच बढ़ती प्रतिस्पर्धा के परिप्रेक्ष्य में कैसे काम कर रही हैं। भारत की इंडो–पैसिफिक नीति बहुपक्षीय सहयोग, समुद्री सुरक्षा, मुक्त और नियम आधारित समुद्री मार्गों की रक्षा तथा क्षेत्रीय देशों के साथ साझेदारी बढ़ाने पर केंद्रित है। भारत ने विभिन्न मंचों पर अपनी प्रतिबद्धता दिखाई है कि यह क्षेत्र सभी के लिए खुला, समावेशी और स्थिर बना रहना चाहिए। इस नीति के अंतर्गत भारत सैन्य अभ्यासों, समुद्री निगरानी, मानवीय सहायता और आपदा राहत जैसे क्षेत्रों में सक्रिय रूप से भाग ले रहा है। क्वाड, जो कि भारत, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया का एक रणनीतिक मंच है, इस नीति को मूर्त रूप देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। क्वाड के माध्यम से भारत न केवल समुद्री सुरक्षा को मज़बूत कर रहा है, बल्कि यह चीन की बढ़ती आक्रामकता के जवाब में एक सामूहिक रणनीतिक संतुलन भी स्थापित कर रहा है। क्वाड

की गतिविधियाँ — जैसे मालाबार सैन्य अभ्यास, आपूर्ति शृंखलाओं का पुनर्गठन, और तकनीकी सहयोग — भारत की क्षेत्रीय प्रभावशीलता को और बढ़ाती हैं। भारत की इंडो–पैसिफिक रणनीति और क्वाड में उसकी भूमिका न केवल शक्ति संतुलन स्थापित करने की दिशा में प्रभावशाली है, बल्कि यह क्षेत्रीय सहयोग, स्थायित्व और विकास के लिए भी एक सकारात्मक दिशा प्रदान करती है। इंडो–पैसिफिक शब्द की उत्पत्ति और विकास हाल के वर्षों में अंतरराष्ट्रीय राजनीति में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन का संकेत है। यह शब्द पहली बार 2007 में जापान के तत्कालीन प्रधानमंत्री शिंजो आबे द्वारा "एशिया के दो महासागरों" को जोड़ने के संदर्भ में प्रयोग किया गया था, लेकिन इसकी व्यापक स्वीकृति 2010 के बाद हुई जब अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और भारत जैसी प्रमुख शक्तियों ने इस शब्द को अपनी विदेश नीति में शामिल करना शुरू किया। "इंडो–पैसिफिक" शब्द हिंद महासागर और प्रशांत महासागर के बीच के समग्र क्षेत्र को संदर्भित करता है, जो न केवल भूगोल की दृष्टि से बड़ा है बल्कि सामरिक और आर्थिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि पारंपरिक "एशिया–पैसिफिक" क्षेत्र की बात करें तो वह मुख्य रूप से पूर्वी एशिया और पश्चिमी प्रशांत तक सीमित था, जिसमें भारत या हिंद महासागर की भूमिका नगण्य थी। इसके विपरीत, "इंडो–पैसिफिक" की अवधारणा भारत को एक केंद्रीय भूमिका प्रदान करती है और इसे दक्षिण पूर्व एशिया, अफ्रीका के पूर्वी तट और ओशिनिया के देशों के साथ जोड़ती है। यह व्यापकता केवल भौगोलिक नहीं बल्कि रणनीतिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि इससे क्षेत्रीय और वैश्विक शक्तियों के लिए सहयोग और प्रतिस्पर्धा दोनों के नए द्वार खुलते हैं। इस क्षेत्र में रणनीतिक प्रतिस्पर्धा की बात करें तो चीन की भूमिका सबसे प्रमुख है। चीन "बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव" और "साउथ चाइना सी" में अपनी आक्रामक सैन्य और आर्थिक गतिविधियों के माध्यम से क्षेत्र में प्रभुत्व स्थापित करना चाहता है। इससे अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया और भारत जैसे देशों की चिंता बढ़ी है, जिन्होंने इस क्षेत्र में संतुलन बनाए रखने और नियम आधारित अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था की रक्षा के लिए मिलकर कार्य करना प्रारंभ किया है। इस प्रतिस्पर्धा ने इंडो–पैसिफिक क्षेत्र को 21वीं सदी के सबसे महत्वपूर्ण रणनीतिक मंच में बदल दिया है। भारत की एक्ट ईस्ट पॉलिसी देश की विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण स्तंभ बन चुकी है, जिसका उद्देश्य दक्षिण–पूर्व एशिया, पूर्वी एशिया और प्रशांत क्षेत्र के देशों के साथ संबंधों को मजबूत करना है। यह नीति मूल रूप से 1990 के दशक में शुरू हुई "लुक ईस्ट पॉलिसी" का उन्नत रूप है, जिसे 2014 के बाद "एक्ट ईस्ट" का नाम दिया गया। इसका मुख्य उद्देश्य केवल सांस्कृतिक और आर्थिक जुड़ाव नहीं, बल्कि रणनीतिक सहयोग, कनेक्टिविटी और सुरक्षा भागीदारी को भी बढ़ाना है। इसी दिशा में भारत का "SAGAR" दृष्टिकोण—जिसका अर्थ है "Security and Growth for All in the Region"—हिंद और प्रशांत महासागरों में समावेशी विकास और साझा सुरक्षा को प्राथमिकता देता है। यह दृष्टिकोण भारत की समुद्री नीतियों की रीढ़ बन चुका है। भारत की नौसैनिक रणनीति भी इसी सोच को आगे बढ़ाती है, जो समुद्री सीमाओं की रक्षा के साथ–साथ क्षेत्रीय स्थिरता में सक्रिय भूमिका निभाने पर केंद्रित है। मालाबार जैसे बहुपक्षीय नौसैनिक अभ्यास इस दिशा में भारत की प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं। साथ ही, भारत इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में व्यापार, निवेश, समुद्री परिवहन और ऊर्जा आपूर्ति के अपने आर्थिक हितों को भी मज़बूती से आगे बढ़ा रहा है, जिससे यह नीति बहुआयामी बन जाती है।

भूमिका:

इंडो–पैसिफिक क्षेत्र आज वैश्विक राजनीति, सुरक्षा और व्यापार के लिहाज़ से अत्यंत महत्वपूर्ण भू–राजनीतिक क्षेत्र बन गया है। यह क्षेत्र हिंद महासागर से लेकर प्रशांत महासागर तक फैला हुआ है, जिसमें एशिया, अफ्रीका और ओशिनिया के कई प्रमुख देश शामिल हैं। विश्व के एक बड़े भाग का समुद्री व्यापार इसी क्षेत्र से होकर गुजरता है, साथ ही ऊर्जा आपूर्ति, समुद्री संसाधनों और रणनीतिक जलमार्गों की उपस्थिति इस क्षेत्र को और भी महत्वपूर्ण बनाती है। दक्षिण चीन सागर, मलक्का जलडमः मध्य और अंडमान सागर जैसे संवेदनशील क्षेत्र वैश्विक शक्ति संघर्ष का केंद्र बन चुके हैं, जिससे इस क्षेत्र का सामरिक

महत्व और भी बढ़ गया है। भारत की भौगोलिक स्थिति इस क्षेत्र में उसे एक विशेष सामरिक लाभ प्रदान करती है। भारत हिंद महासागर के केंद्र में स्थित है और इसकी लंबी समुद्री सीमा इसे एक समुद्री शक्ति के रूप में स्थापित करती है। अंडमान और निकोबार द्वीप समूह की उपस्थिति के कारण भारत मलक्का जलडमरूमध्य जैसे रणनीतिक जलमार्गों पर नजर रखने की क्षमता रखता है। इसके अलावा, भारत की पूर्वी और दक्षिण–पूर्वी एशियाई देशों से भौगोलिक निकटता उसे क्षेत्रीय सहयोग के एक मजबूत स्तंभ के रूप में उभरने का अवसर देती है। हाल के वर्षों में भारत ने "एक्ट ईस्ट पॉलिसी" और "SAGAR" (Security and Growth for All in the Region) जैसी पहलें शुरू कर अपनी समुद्री रणनीति को स्पष्ट किया है। इस शोध का मुख्य उद्देश्य भारत की इंडो–पैसिफिक नीति और क्वाड में उसकी भूमिका का विश्लेषण करना है। शोध यह जानने का प्रयास करेगा कि भारत किस प्रकार इस क्षेत्र में शक्ति संतुलन बनाए रखने के लिए रणनीतिक साझेदारियों का निर्माण कर रहा है और किस हद तक यह नीतियाँ क्षेत्रीय स्थिरता तथा सहयोग को बढ़ावा दे रही हैं। साथ ही यह भी महत्वपूर्ण है कि भारत की ये नीतियाँ वैश्विक शक्तियों, विशेषकर अमेरिका और चीन के बीच बढ़ती प्रतिस्पर्धा के परिप्रेक्ष्य में कैसे काम कर रही हैं। भारत की इंडो–पैसिफिक नीति बहुपक्षीय सहयोग, समुद्री सुरक्षा, मुक्त और नियम आधारित समुद्री मार्गों की रक्षा तथा क्षेत्रीय देशों के साथ साझेदारी बढ़ाने पर केंद्रित है। भारत ने विभिन्न मंचों पर अपनी प्रतिबद्धता दिखाई है कि यह क्षेत्र सभी के लिए खुला, समावेशी और स्थिर बना रहना चाहिए। इस नीति के अंतर्गत भारत सैन्य अभ्यासों, समुद्री निगरानी, मानवीय सहायता और आपदा राहत जैसे क्षेत्रों में सक्रिय रूप से भाग ले रहा है। क्वाड, जो कि भारत, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया का एक रणनीतिक मंच है, इस नीति को मूर्त रूप देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। क्वाड के माध्यम से भारत न केवल समुद्री सुरक्षा को मज़बूत कर रहा है, बल्कि यह चीन की बढ़ती आक्रामकता के जवाब में एक सामूहिक रणनीतिक संतुलन भी स्थापित कर रहा है। क्वाड की गतिविधियाँ — जैसे मालाबार सैन्य अभ्यास, आपूर्ति शृंखलाओं का पुनर्गठन, और तकनीकी सहयोग — भारत की क्षेत्रीय प्रभावशीलता को और बढ़ाती हैं। भारत की इंडो–पैसिफिक रणनीति और क्वाड में उसकी भूमिका न केवल शक्ति संतुलन स्थापित करने की दिशा में प्रभावशाली है, बल्कि यह क्षेत्रीय सहयोग, स्थायित्व और विकास के लिए भी एक सकारात्मक दिशा प्रदान करती है। इंडो–पैसिफिक शब्द की उत्पत्ति और विकास हाल के वर्षों में अंतरराष्ट्रीय राजनीति में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन का संकेत है। यह शब्द पहली बार 2007 में जापान के तत्कालीन प्रधानमंत्री शिंजो आबे द्वारा "एशिया के दो महासागरों" को जोड़ने के संदर्भ में प्रयोग किया गया था, लेकिन इसकी व्यापक स्वीकृति 2010 के बाद हुई जब अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और भारत जैसी प्रमुख शक्तियों ने इस शब्द को अपनी विदेश नीति में शामिल करना शुरू किया। "इंडो–पैसिफिक" शब्द हिंद महासागर और प्रशांत महासागर के बीच के समग्र क्षेत्र को संदर्भित करता है, जो न केवल भूगोल की दृष्टि से बड़ा है बल्कि सामरिक और आर्थिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि पारंपरिक "एशिया–पैसिफिक" क्षेत्र की बात करें तो वह मुख्य रूप से पूर्वी एशिया और पश्चिमी प्रशांत तक सीमित था, जिसमें भारत या हिंद महासागर की भूमिका नगण्य थी। इसके विपरीत, "इंडो–पैसिफिक" की अवधारणा भारत को एक केंद्रीय भूमिका प्रदान करती है और इसे दक्षिण पूर्व एशिया, अफ्रीका के पूर्वी तट और ओशिनिया के देशों के साथ जोड़ती है। यह व्यापकता केवल भौगोलिक नहीं बल्कि रणनीतिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि इससे क्षेत्रीय और वैश्विक शक्तियों के लिए सहयोग और प्रतिस्पर्धा दोनों के नए द्वार खुलते हैं। इस क्षेत्र में रणनीतिक प्रतिस्पर्धा की बात करें तो चीन की भूमिका सबसे प्रमुख है। चीन "बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव" और "साउथ चाइना सी" में अपनी आक्रामक सैन्य और आर्थिक गतिविधियों के माध्यम से क्षेत्र में प्रभुत्व स्थापित करना चाहता है। इससे अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया और भारत जैसे देशों की चिंता बढ़ी है, जिन्होंने इस क्षेत्र में संतुलन बनाए रखने और नियम आधारित अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था की रक्षा के लिए मिलकर कार्य करना प्रारंभ किया है। इस प्रतिस्पर्धा ने इंडो–पैसिफिक क्षेत्र को 21वीं सदी के सबसे महत्वपूर्ण रणनीतिक मंच में बदल दिया है। भारत की एक्ट ईस्ट पॉलिसी देश की विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण स्तंभ बन चुकी है, जिसका उद्देश्य दक्षिण–पूर्व एशिया,

पूर्वी एशिया और प्रशांत क्षेत्र के देशों के साथ संबंधों को मजबूत करना है। यह नीति मूल रूप से 1990 के दशक में शुरू हुई "लुक ईस्ट पॉलिसी" का उन्नत रूप है, जिसे 2014 के बाद "एक्ट ईस्ट" का नाम दिया गया। इसका मुख्य उद्देश्य केवल सांस्कृतिक और आर्थिक जुड़ाव नहीं, बल्कि रणनीतिक सहयोग, कनेक्टिविटी और सुरक्षा भागीदारी को भी बढ़ाना है। इसी दिशा में भारत का "SAGAR" दृष्टिकोण—जिसका अर्थ है "Security and Growth for All in the Region"—हिंद और प्रशांत महासागरों में समावेशी विकास और साझा सुरक्षा को प्राथमिकता देता है। यह दृष्टिकोण भारत की समुद्री नीतियों की रीढ़ बन चुका है। भारत की नौसैनिक रणनीति भी इसी सोच को आगे बढ़ाती है, जो समुद्री सीमाओं की रक्षा के साथ–साथ क्षेत्रीय स्थिरता में सक्रिय भूमिका निभाने पर केंद्रित है। मालाबार जैसे बहुपक्षीय नौसैनिक अभ्यास इस दिशा में भारत की प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं। साथ ही, भारत इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में व्यापार, निवेश, समुद्री परिवहन और ऊर्जा आपूर्ति के अपने आर्थिक हितों को भी मज़बूती से आगे बढ़ा रहा है, जिससे यह नीति बहुआयामी बन जाती है।

क्वाड के सदस्यः भारत, अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलियाः

क्वाड (Quadrilateral Security Dialogue) एक रणनीतिक मंच है जिसमें भारत, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया शामिल हैं। यह समूह लोकतांत्रिक मूल्यों, मुक्त और नियम–आधारित अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था, तथा समुद्री सुरक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से स्थापित किया गया है। इसकी प्राथमिकताएँ क्षेत्रीय स्थिरता सुनिश्चित करना, इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में शक्ति संतुलन बनाए रखना, तथा आपसी सहयोग को बढ़ावा देना हैं। क्वाड के कार्य व्यापक हैं, जिनमें सबसे प्रमुख हैं बहुपक्षीय सैन्य अभ्यास, जैसे 'मालाबार', जो सामरिक एकजुटता और आपसी तालमेल को मजबूत करते हैं। इसके अलावा, क्वाड सदस्य आपदा राहत और मानवीय सहायता अभियानों में भी सहयोग करते हैं, जैसे कोविड–19 महामारी के दौरान वैक्सीन वितरण और स्वास्थ्य ढाँचे का समर्थन। तकनीकी क्षेत्र में यह समूह 5G, साइबर सुरक्षा और उभरती प्रौद्योगिकियों के विकास में साझेदारी कर रहा है। आपूर्ति श्रृंखलाओं को चीन पर निर्भरता से मुक्त करने की दिशा में भी प्रयास किए जा रहे हैं। चीन इस समूह को एक "एशियाई नाटो" के रूप में देखता है और इसे क्षेत्रीय असंतुलन का कारण मानता है। उसकी आशंका है कि यह समूह उसकी क्षेत्रीय शक्ति को सीमित करने का प्रयास कर रहा है, जिससे इस क्षेत्र में भू–राजनीतिक तनाव की स्थिति बनती जा रही है।

भारत की रणनीति और क्वाड की सहभागिता से शक्ति संतुलन पर प्रभावः

भारत की इंडो–पैसिफिक रणनीति और क्वाड में उसकी सहभागिता क्षेत्रीय शक्ति संतुलन को प्रभावित करने में अहम भूमिका निभा रही है। यह रणनीति मुख्य रूप से एक स्वतंत्र, मुक्त और समावेशी समुद्री क्षेत्र सुनिश्चित करने पर केंद्रित है, जिसमें सभी देशों की संप्रभुता और अंतरराष्ट्रीय कानूनों का सम्मान किया जाए। क्वाड में भारत की भागीदारी इस उद्देश्य को सामूहिक प्रयासों के माध्यम से साकार करने की दिशा में एक ठोस कदम है। चारों सदस्य देशों की सामूहिक शक्ति और साझा मूल्यों के चलते यह मंच चीन की आक्रामक नीतियों के विरुद्ध एक संतुलनकारी शक्ति के रूप में उभर रहा है। दक्षिण चीन सागर और हिंद महासागर जैसे रणनीतिक क्षेत्रों में यह संतुलन विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाता है। दक्षिण चीन सागर में चीन की सैन्य उपस्थिति, कृत्रिम द्वीप निर्माण और समुद्री सीमा विस्तार की नीतियों ने क्षेत्रीय अस्थिरता को जन्म दिया है। इसके जवाब में क्वाड देशों द्वारा नौसैनिक उपस्थिति बढ़ाना, सामरिक अभ्यास करना और क्षेत्रीय साझेदारियों को मज़बूत करना एक संतुलन स्थापित करने का प्रयास है। वहीं, हिंद महासागर में भारत की भौगोलिक स्थिति उसे एक निर्णायक रणनीतिक बढ़त प्रदान करती है, जिससे वह क्षेत्रीय स्थिरता में प्रभावी भूमिका निभा सकता है। अमेरिका और चीन के बीच वैश्विक प्रतिस्पर्धा के परिप्रेक्ष्य में भारत की स्थिति एक "स्वतंत्र और संतुलित शक्ति" की है। भारत किसी भी सैन्य गुटबंदी का हिस्सा न बनते हुए, सामरिक सहयोग और आर्थिक साझेदारी के माध्यम से अपनी स्वतंत्र विदेश नीति को बनाए रखता है। इस

परि दृश्य में ASEAN और अन्य क्षेत्रीय शक्तियाँ जैसे इंडोनेशिया, वियतनाम, सिंगापुर तथा फ्रांस और ब्रिटेन जैसे बाहरी खिलाड़ी भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। ये देश एक नियम–आधारित व्यवस्था के समर्थक हैं और भारत जैसे देश के साथ मिलकर संतुलन और सहयोग के नए रास्ते खोल रहे हैं।

अध्ययन के उद्देश्यः

1. भारत की इंडो–पैसिफिक रणनीति और क्वाड (QUAD) में उसकी भूमिका का विश्लेषण करना।
2. इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में क्षेत्रीय सहयोग की संभावनाओं तथा चुनौतियों का मूल्यांकन करना।

साहित्यिक सर्वेक्षणः

राजीव कुमार भाटिया, विजय सखूजा, (2015), "हिंद–प्रशांत क्षेत्रः राजनीतिक और रणनीतिक संभावनाएं", जो कि इंडियन काउंसिल ऑफ वर्ल्ड अफेयर्स (ICWA) द्वारा प्रकाशित की गई है और जिसके संपादक राजीव के. भाटिया और विजय सखुजा हैं, एक समसामयिक व महत्वपूर्ण विषय पर केंद्रित गंभीर अध्ययन है। यह पुस्तक इंडो–पैसिफिक क्षेत्र की भूराजनीतिक और रणनीतिक परिस्थितियों का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करती है। पुस्तक में अनेक विशेषज्ञों के लेख सम्मिलित हैं, जो इस क्षेत्र में उभरते शक्ति समीकरणों, समुद्री सुरक्षा, व्यापार मार्गों, बहुपक्षीय सहयोग, तथा चीन, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, जापान और भारत जैसी प्रमुख शक्तियों की भूमिका को रेखांकित करते हैं। यह पुस्तक भारत की 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी' और क्वाड जैसे मंचों में उसकी सक्रियता को भी उजागर करती है। लेखों में गहन शोध और स्पष्ट दृष्टिकोण झलकता है, जिससे पाठक को इंडो–पैसिफिक क्षेत्र की व्यापक समझ प्राप्त होती है। यह पुस्तक रणनीति, अंतरराष्ट्रीय संबंधों और सुरक्षा मामलों में रुचि रखने वाले छात्रों, शोधकर्ताओं और नीति निर्माताओं के लिए अत्यंत उपयोगी है। संक्षेप में, यह एक विचारोत्तेजक, जानकारीपूर्ण और सामयिक पुस्तक है, जो भारत की विदेश नीति और क्षेत्रीय भूमिका को समझने में सहायक सिद्ध होती है।

भाटिया राजीव, सुखीजा विजय,"हिंद–प्रशांत क्षेत्रः राजनीतिक और रणनीतिक संभावनाएं", इंडियन काउंसिल ऑफ वर्ल्ड अफेयर्स, 2015

मेजर एस. के. शर्मा ,"हिंद–प्रशांत क्षेत्र की चुनौतियाँ", द्वारा लिखित एक महत्वपूर्ण पुस्तक है, जो वर्तमान वैश्विक राजनीति में चीन को इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में जिन रणनीतिक, सैन्य और राजनीतिक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, उनका गहन विश्लेषण प्रस्तुत करती है। यह पुस्तक चीन की विस्तारवादी नीति, समुद्री शक्ति के विस्तार, दक्षिण चीन सागर में उसके आक्रामक रवैये, और क्वाड (QUAD) जैसे क्षेत्रीय गठबंधनों से उसे उत्पन्न होने वाली चुनौतियों को विस्तार से उजागर करती है। साथ ही, इसमें भारत, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों की सामूहिक भूमिका पर भी प्रकाश डाला गया है कि वे कैसे चीन के प्रभाव को संतुलित करने की दिशा में काम कर रहे हैं। लेखक ने सैन्य पृष्ठभूमि होने के कारण रणनीतिक दृष्टिकोण से विषय को बड़े सटीक और तथ्यपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया है। पुस्तक में भू–राजनीतिक समीकरणों और चीन की विदेश नीति की आलोचनात्मक व्याख्या की गई है। यह पुस्तक छात्रों, शोधकर्ताओं, सैन्य विश्लेषकों और नीति–निर्माताओं के लिए अत्यंत उपयोगी है जो इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में शक्ति–संतुलन को समझना चाहते हैं।

डी गोपाल दलबीर अहलावत (2016) ,"हिंद–प्रशांतः उभरती शक्तियाँ, विकसित होते क्षेत्र और वैश्विक शासन की चुनौतियाँ", ने संपादित किया है। पुस्तक का मूल उद्देश्य इंडो-प्रशांत क्षेत्र में शक्ति संतुलन, राजनीतिक एवं आर्थिक विकास, तथा वैश्विक शासन पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण प्रस्तुत करना है। इस क्षेत्र के भू-राजनीतिक महत्व को देखते हुए किताब में चीन और भारत के उदय के साथ–साथ ऑस्ट्रेलिया, जापान, इंडोनेशिया जैसे मध्य शक्ति देशों की भूमिका को भी उजागर किया गया है। इस पुस्तक की विशेषता है कि यह न केवल प्रमुख देशों की रणनीतियों का आकलन करती है, बल्कि उन छोटे एवं मध्यम शक्तियों की दृष्टि को भी स्थान देती है जिन्हें अक्सर बहु-राष्ट्रिय नीतियों में पीछे छोड़ा जाता है। नीति निर्माताओं, शोधार्थियों और छात्रों के लिए यह ग्रंथ इंडो-प्रशांत के समकालीन जटिल संदर्भों

को समझने में एक मूल्यवान संसाधन है। कुल मिलाकर, यह पुस्तक वर्तमान विश्व-राजनीति और क्षेत्रीय सुरक्षा अध्ययन के लिए समयोचित और सूचनाप्रद योगदान है।

गोपाल डी अहलावत दलबीर, हिंद–प्रशांतः उभरती शक्तियाँ,"विकसित होते क्षेत्र और वैश्विक शासन की चुनौतियाँ", आकर प्रकाशन, 2016।

एयर मार्शल अनिल चोप्रा (2022), "हिंद–प्रशांत में महान खेलः भारत की कड़ी", भारत की रणनीतिक स्थिति को लेकर एक समयोचित और व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत करती है। संपादक एयर मार्शल अनिल चोप्रा ने देश के विभिन्न विशेषज्ञों को एक मंच पर लाकर इंडो-प्रशांत क्षेत्र में भारत की भूमिका, चुनौतियाँ, और अवसरों को त्रिपक्षीय दृष्टिकोण से समझने की कोशिश की है। पुस्तक के तीन मुख्य विषय हैंरू भारत की बढ़ती शक्ति और इंडो-प्रशांत का उदय, क्वाड (QUAD) के 'डायमंड' में भारत की महत्वपूर्ण कड़ी, और क्वाड से बाहर के अन्य क्षेत्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय अभिनेताओं के साथ भारत के संबंध। इन विषयों के माध्यम से पुस्तक हवा और नौ-सैनिक रणनीतियों, समुद्री सुरक्षा, शक्ति मुकाबले, तथा भारत की विदेश नीति के विविध आयामों की समीक्षा करती है। भारत की विदेश नीति में संतुलन, रणनीतिक स्वायत्तता और क्षेत्रीय सहयोग की भूमिका पुस्तक में विशेष रूप से उभरकर आती है। कुछ अध्यायों में विश्लेषण अधिक गहराई में हो सकता थाकृविशेष रूप से छोट-छोटे पड़ोसी देशों की रणनीतिक प्रतिक्रियाएँ या बाधाएँ। इसके बावजूद, यह ग्रंथ नीति निर्धारकों, सैन्य तथा रणनीतिक शोधकर्ताओं, और अंतरराष्ट्रीय संबंधों के शिक्षार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी है, क्योंकि यह भारत को इंडो-प्रशांत खेल में 'पिवट' यानी केन्द्र-स्थल के रूप में स्थापित करता है और दिखाता है कि कैसे भारत को रणनीतिक निर्णयों, साझेदारियों और चुनौतियों के बीच संतुलन बनाना होगा।

मार्शल एयर, अनिल चोप्रा, के डब्ल्यू प्रकाशन, नई दिल्ली, 2022

मल्टीलेटरल मंचों में भारत की सक्रियता (ASEAN, IORA, BIMSTEC): भारत ने हाल के वर्षों में इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में अपनी भूमिका को मज़बूत करने के लिए बहुपक्षीय मंचों पर सक्रिय भागीदारी निभाई है। ASEAN (Association of Southeast Asian Nations) के साथ भारत का संबंध "स्ट्रेटेजिक पार्टनरशिप" स्तर तक पहुँच चुका है, जिसमें राजनीतिक, सुरक्षा, आर्थिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में सहयोग हो रहा है। ASEAN–India समिट, क्षेत्रीय मंचों में संवाद और सुरक्षा सहयोग भारत को दक्षिण–पूर्व एशियाई देशों के साथ जुड़ने का अवसर देता है। इसके अलावा, IORA (Indian Ocean Rim Association) के माध्यम से भारत हिंद महासागर क्षेत्र के देशों के साथ समुद्री सुरक्षा, व्यापार, और नीली अर्थव्यवस्था के क्षेत्रों में सहयोग बढ़ा रहा है। BIMSTEC (Bay of Bengal Initiative for Multi–Sectoral Technical and Economic Cooperation) मंच भारत को बंगाल की खाड़ी के देशों के साथ रणनीतिक गहराई प्रदान करता है, जिससे कनेक्टिविटी, ऊर्जा और समुद्री सहयोग के मार्ग खुलते हैं।

भारत "नीली अर्थव्यवस्था" को बढ़ावा देने में भी अग्रणी भूमिका निभा रहा है, जिसमें समुद्री संसाधनों का सतत दोहन, मछलीपालन, समुद्री पर्यटन और समुद्री जैव विविधता संरक्षण शामिल है। इसके साथ ही, समुद्री कानूनों के पालन, विशेष रूप से UNCLOS (United Nations Convention on the Law of the Sea), में भारत की प्रतिबद्धता इसे एक जिम्मेदार समुद्री शक्ति बनाती है। जलवायु परिवर्तन के मुद्दे पर भी भारत ने अंतरराष्ट्रीय मंचों पर स्पष्ट रुख अपनाया है, जैसे ISA (International Solar Alliance) और Disaster Resilient Infrastructure जैसे पहलें। इन्फ्रास्ट्रक्चर विकास, डिजिटल कनेक्टिविटी और व्यापारिक भागीदारी के क्षेत्र में भी भारत ने जापान, ऑस्ट्रेलिया और ASEAN देशों के साथ मिलकर कई परियोजनाएँ शुरू की हैं। ये पहलें भारत को इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में एक विश्वसनीय साझेदार और स्थायित्व के स्तंभ के रूप में स्थापित कर रही हैं।

चुनौतियाँ और संभावनाएँः

इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में भारत की रणनीति और क्वाड में उसकी सक्रिय भूमिका अनेक अवसरों के साथ–साथ कई जटिल चुनौतियाँ भी प्रस्तुत करती है। सबसे प्रमुख चुनौती चीन के आक्रामक और विस्तारवादी रवैये

से उत्पन्न होती है। चीन जिस तरह से दक्षिण चीन सागर में सैन्य निर्माण कर रहा है, छोटे देशों पर दबाव बना रहा है, और बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) के माध्यम से रणनीतिक आर्थिक पकड़ बनाने की कोशिश कर रहा है, वह न केवल क्षेत्रीय शक्ति संतुलन को चुनौती देता है बल्कि भारत के हितों के लिए भी सीधा खतरा बन गया है। चीन की लगातार बढ़ती नौसैनिक उपस्थिति, खासकर हिंद महासागर में, भारत की समुद्री सुरक्षा के लिए चिंता का विषय है। क्वाड को लेकर भी कुछ सीमाएँ और आलोचनाएँ हैं। पहला, यह मंच अब तक कोई औपचारिक सुरक्षा गठबंधन नहीं बन पाया है, जिसके कारण इसकी प्रभावशीलता पर सवाल उठते हैं। दूसरा, सदस्य देशों के बीच प्राथमिकताओं में अंतर होने से निर्णय–प्रक्रिया में बाधा आती है। उदाहरण के लिए, अमेरिका चीन के प्रति अधिक सख्त रुख अपनाता है, जबकि भारत अपनी रणनीतिक स्वतंत्रता को बनाए रखते हुए संतुलन बनाने की कोशिश करता है। इसके अलावा, क्वाड पर 'एशियाई नाटो' होने के आरोप भी लगाए जाते हैं, जिससे ASEAN जैसे देशों में असहजता उत्पन्न होती है जो किसी सैन्य गुटबंदी का हिस्सा नहीं बनना चाहते। भारत के लिए सबसे बड़ी चुनौती यह है कि वह अपनी रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखे। भारत पर यह दबाव रहता है कि वह अमेरिका और पश्चिमी देशों के साथ कितनी निकटता बनाए रखे, और कब अपनी स्वतंत्र विदेश नीति को प्राथमिकता दे। चीन के साथ जटिल सीमा विवाद और व्यापक आर्थिक संबंधों को देखते हुए भारत को अपने कदम बहुत सोच–समझकर बढ़ाने होते हैं। इन सबके बावजूद, इस क्षेत्र में सहयोग की विशाल संभावनाएँ मौजूद हैं। भारत के पास डिजिटल तकनीक, समुद्री सुरक्षा, आपदा राहत और जलवायु परिवर्तन जैसे मुद्दों पर नेतृत्व करने का अवसर है। क्वाड और अन्य मंचों के ज़रिए भारत एक "नेट सिक्योरिटी प्रोवाइडर" के रूप में अपनी पहचान बना सकता है। साथ ही, भारत के लोकतांत्रिक मूल्यों, जनसंख्या, भू–स्थिति और बढ़ती आर्थिक शक्ति के कारण उसे इंडो–पैसिफिक में नेतृत्वकारी भूमिका निभाने का नैतिक और व्यावहारिक अवसर प्राप्त है। यदि भारत संतुलन, सहयोग और सतर्कता के साथ आगे बढ़े, तो वह इस क्षेत्र की स्थिरता और विकास का प्रमुख वाहक बन सकता है।

निष्कर्ष:

भारत की इंडो–पैसिफिक नीति का समग्र मूल्यांकन किया जाए तो यह स्पष्ट होता है कि भारत ने हाल के वर्षों में इस क्षेत्र को अपनी विदेश नीति का केंद्रीय क्षेत्र बना लिया है। यह नीति केवल समुद्री सीमाओं की रक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें व्यापार, कनेक्टिविटी, समुद्री सुरक्षा, जलवायु सहयोग, बहुपक्षीय साझेदारी और रणनीतिक संतुलन जैसी कई परतें शामिल हैं। भारत की "एक्ट ईस्ट पॉलिसी", "SAGAR" दृष्टिकोण और बहुपक्षीय मंचों में सक्रिय भागीदारी, जैसे ASEAN, IORA और BIMSTEC, यह दर्शाते हैं कि भारत इंडो–पैसिफिक को केवल एक भू–राजनीतिक क्षेत्र नहीं, बल्कि एक समावेशी विकास और सहयोग का मंच मानता है। क्वाड में भारत की भूमिका का भविष्य भी अत्यंत महत्वपूर्ण बनता जा रहा है। जहां अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया इस मंच को चीन की बढ़ती ताकत के मुकाबले एक सामूहिक रणनीति के रूप में देखते हैं, वहीं भारत इसमें एक संतुलनकारी शक्ति और जिम्मेदार साझेदार के रूप में उभर रहा है। क्वाड के ज़रिए भारत ने सैन्य अभ्यासों, तकनीकी सहयोग, वैक्सीन कूटनीति, आपदा प्रबंधन और आपूर्ति श्रृंखला मज़बूती जैसे कई क्षेत्रों में अपनी उपस्थिति दर्ज की है। हालाँकि, भारत को क्वाड की भूमिका को संतुलित और समावेशी बनाए रखने की दिशा में लगातार काम करना होगा, ताकि यह मंच किसी सैन्य गठबंधन की छवि न बनाए और क्षेत्रीय देशों के बीच असहजता का कारण न बने। शक्ति संतुलन और क्षेत्रीय सहयोग की दिशा में भारत का मार्ग संयमित, संतुलित और दूरदर्शी रणनीति पर आधारित है। भारत ना तो पूरी तरह से किसी गुटबंदी का हिस्सा बनना चाहता है, और ना ही वह क्षेत्रीय असंतुलन को बढ़ावा देना चाहता है। भारत की विदेश नीति 'रणनीतिक स्वायत्तता' के सिद्धांत पर टिकी है, जो उसे वैश्विक और क्षेत्रीय ताक़तों के बीच संतुलन बनाने में मदद करती है। आने वाले समय में भारत के लिए यह आवश्यक होगा कि वह अपने सामरिक हितों की रक्षा करते हुए बहुपक्षीय सहयोग को प्राथमिकता दे, और इंडो–पैसिफिक क्षेत्र को एक खुला, स्थिर और नियम–आधारित मंच बनाए रखने में निर्णायक भूमिका निभाए। इसी मार्ग से

भारत न केवल एक प्रभावशाली क्षेत्रीय शक्ति, बल्कि वैश्विक नेतृत्वकर्ता के रूप में भी अपनी स्थिति मजबूत कर सकता हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः

- गुप्ता, अशीन दास, भारत और हिंद महासागर विश्व व्यापार और राजनीति, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, 2004।
- कुमार, सतीश ,"भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा" वार्षिक समीक्षा 2001, विकास प्रकाशन। नई दिल्ली, 2002.
- एस. खुराना गुरप्रीत,"इंडो–पैसिफिक क्षेत्र", नोशन प्रकाशन, 2018।
- कुमार इन्द्रेश ,"भारत की हिंद–प्रशांत नीति", असर प्रकाशन, 2024।
- महापात्र चिंतामणि, "इंडो–पैसिफिक का उदयः दृष्टिकोण, आयाम और चुनौतियाँ", पेंटागन प्रकाशन, 2020।
- सिंह स्वर्ण,"चीन और इंडो–पैसिफिक क्षेत्रः रणनीतियाँ और रूप", 2024।
- जगन्नाथ पी. पांडा, "इंडो–पैसिफिक में चीन–भारत–जापान विचार, हित और बुनियादी ढांचा", पेंटागन प्रकाशन ,2018
- बी. आर. दीपक, "उभरता भारत और चीन हिमालय और इंडो–पैसिफिक में रणनीतिक प्रतिद्वंद्विता", पालग्रेव प्रकाशन,2025।
- ऑस्लिन, एम. ,"इंडो–पैसिफिक में सुरक्षाः एक क्षेत्रीय रणनीति की ओर", वॉशिंगटन, डी.सी.: अमेरिकन एंटरप्राइज इंस्टीट्यूट फॉर पब्लिक पॉलिसी रिसर्च, 2010।
- ऐसन, आर. और बॉल, "एशिया–प्रशांत में रणनीति और सुरक्षा", क्रोज़ नेस्ट, न्यू साउथ वेल्स प्रकाशन, ऑस्ट्रेलिया 2006।